भारतीय संगीत के प्रमुख गजवाद्य : एक अध्ययन

संगीत का ललित कला में प्रमुख स्थानहै आज के भारतीय संगीत में वैदिक तथा तांत्रिक दोनों परंम्पराओं का समन्वय पायाजाता है। संगीत के विकास एवं उत्थान में दोनों के योगदान को भुलाया नही जा सकता है।संगीत के लिये प्राचीन संज्ञा गांधर्व होता है, भावों का स्फुरण गीत के रूप में होने पर ही वाद्य एवं नृत्य की कल्पना साकार हो उठी है। चतुर्विद वाद्यों में गजवाद्यों का अपना विशेष महत्व रहा है। गजवाद्य गले के सबसे करीब होने के कारण समस्त संगीत विदों के लिये अत्यंत प्रिय रहे हैं। गज वाद्यों के संगीत यात्रा में प्रमुख वाद्य आज अपनी अनूठी विशषताओ के कारण ही संगीत मर्मज्ञों को गुदगुदाते चले आ रहे हैं।

रावणहस्त वीणा या रावणास्त्र

यहएक पुराना छड़ी वाला यन्त्र है जो लंकेश्वर रावण द्वारा आविष्कृत था। हमें इस वाद्य यन्त्र का उल्लेख नान्यदेव के 'भारत भाष्य' और संगीत साहित्य की कई किताबों में जैसे 'संगीत मकरन्द', 'संगीत पारिजात', 'संगीत सार', 'संगीत सुधा' आदि में मिलता है। इस यन्त्र के उपलब्ध विवरण के अनुसार यह कहा जाता है कि यह दो तरह का होता था – एक सारंगी से मिलता–जुलता और दूसरा रावणहत्था या रावणास्त्र, जो सारंगी के जैसे ही लकड़ी से बना होता था। उसमें एक कोठ का पेट है जो ध्वनि पेटिका के रूप में व्यवहृत होता था। इसमें 3 या 4 तार थे और जो छड़ी इस्तेमाल की जाती थी वह घोड़े के बालों से बनती थी।

"रावणहस्त वीणा साग और काठ की बनती है। उसकी दण्डी साग की होती है और पेट काठ का। तुम्बे की जगह पर वह लम्बी होती है। ऊपर काठ की मेरू स्थनि बनी होती थी। उसमें तारों को लपेटने के लिए खूँटियों के लिए स्थान होता था। उसके तार ताँत के होते थे। तारों के अग्र भाग को काठ के तुम्बे की कमर में बाँधा जाता था। इस प्रकार से तीन या चार तार लगाए जाते थे। घोड़े की पूँछ के बाल से कमान बनाई जाती थी जो पिनाकी वीणा के समान अर्थात् धनुषाकार होती थी।"

सारंगी

सारंगी भी रावणास्त्र या रावणहत्था के जैसा है। आधुनिक संगीतज्ञों का यह मानना है कि यह रावणास्त्र का उन्नत रूप है। यह भारत का एक प्राचीन और सुश्राव्य यन्त्र है। यह भारत का बेला है। यह यन्त्र काठ के एक टुकड़े से बना है जो अन्दर से खाली किया गया है और इसका पेट भेड़ या बकरी के चमड़े से ढका होता है। यह दो फिट का होता है, सितार से छोटा। सारंगी में तीन या चार तार हो सकते हैं जिसमें तीन गाँठ वाले होते हैं और एक धातु का। धातु के तार में सबसे धीमा सुर लगता है। पेट के बीचोंबीच एक पुल निर्दिष्ट किया जाता है जो चमड़े का समर्थन करता है। यह यन्त्र छड़ी से बजता है। इसका सर, जो कि खाली होता है के हर प्रान्त में चार सुर बाँधने वाली खूँटी होती है। इसमें कोई फ्रेट नहीं होते। चार तारों के सुर बाँधने की पद्धति है सा पा सा गा या मा, राग के अनुसार।

इन तारों को उनके प्रान्त में अंगुली से दबाकर रोका जाता है न कि उन पर अंगुली रखकर। इस तरह से भारतीय संगीत के सारे विशेष गमक उत्पन्न किये जा सकते हैं। इसके सुर सुश्राव्य होते हैं और वायोला से मिलते–जुलते हैं। यह गाना गाते समय बहुत सुन्दर संगत देती है। सारंगी में चार मुख्य तारों के अधीन 25 से 20 समवेदनापूर्ण तार होते हैं।कण्ठ संगीत के अतिरिक्त सारंगी कत्थक नृत्य की संगत में भी व्यवहार में लाई जाती है। सारंगी में जो अविरत लहरा बजाया जाता है शायद नीरस लगे परन्तु यह नृत्य के सारे आन्दोलन साफ–साफ दर्शाता है। यह यन्त्र 'साम' के श्रोताओं की उत्तेजना और सन्तुष्टि को उत्पन्न और दर्शा सकता है। आधुनिक काल में इस तरह के यन्त्र संगत के लिए व्यवहार में लाये जाते हैं और 'स्वर लहर' की जगह कई और सुर व्यवहार में लाये जाते हैं जो उन्नति के लक्षण हैं। तानसेन और खुसरो मध्य युग के संगीत रत्न थे।

रबाब

रबाब का उल्लेख संस्कृत साहित्य में पाया जाता है और मध्य युग के 'अहोबल' ने इस यन्त्र का परिचय करवाया था, अपनी पुस्तक "संगीत पारिजात" में यह कहते हुए – "रवं वहति यद्यस्मात तत्तो रवावहः स्मृतः"।

"अहोबल" के पूर्व किसी संस्कृत लेखक ने अपने लेखों में रबाब का उल्लेख नहीं किया है। यह प्रतीत होता है कि यह मुगल काल में प्रचलित हुआ क्योंकि शायद यह तानसेन और उनके बाद के वादकों द्वारा बजाया जाता था। यह प्रतीत होता है कि रबाब मुगल राज अकबर के पूर्व आविष्कृत हुआ था क्योंकि मलिक मुहम्मद जायसी ने 'पद्मावत' में रबाब का जिक्र किया है।

"जयं पखाउज आऊज बाजा, सुरमण्डल रबाब भल साजा"
बल्कि कृष्ण दास भी यह उल्लेख करना नहीं भूले –
"तहं बाजत बीन, रबाब, किन्नरी, अमृत कुण्डली यन्त्र

ताल, मुरज, रबाब, बीना, किन्नरी रस सार''।

किसी भी पुराने लेख में रबाब के गठन का विवरण नहीं है जिससे इसके आविर्भाव का समय पता चल सके। कबीर ने जब अपनी कविताओं में 'रबाब' का उल्लेख किया तो वे भी इसके गठन का जिक्र करना भूल गए।

''सब रग तंत रबाब तन विरहा बजावे नित,
और न कोई सुन सकै कै सांई के चित ।''

मध्य एशिया में यह प्रचलित है कि रबाब छड़ी से बजता है।–''रबाब वस्तुतः आधुनिक सरोद तथा सारंगी के मध्य का बाजा है। गज से बजने वाला रबाब लगभग सारंगी के समान तथा जवा से बजने वाला रबाब लगभग सरोद के समान होता था। यह सम्भव है कि त्रिकोण से बजने वाले रबाब को तानसेन अथवा उसके वंशजों के शास्त्रीय संगीत की सभी विशेषताओं को लाने तथा वीणा के समान उसे महत्वपूर्ण बनाने के लिए परिष्कृत किया हो।'

इसराज

इसराज बंगाल का सारंगी है। यह सारंगी से थोड़ा–सा लम्बा है। इस यन्त्र का गठन यह प्रमाणित करता है कि यह सितार के बाद आविष्कृत हुआ था और यह सारंगी जैसा ही है। इसराज में गांठ के तार नहीं होते। इसमें चार मुख्य तार है और तारों के सुर सा, पा, पा, मा है जिसमें आखिरी तार मुख्य है। इसके अलावा इसमें 15 से 20 संवेदनापूर्ण तार है। इसराज में स्टील या पीतल के 16 फ्रेट है। इन फ्रेटो को अपने स्थान से हिलाया नहीं जाता है जैसे कि सितार के मृदु स्वर लगाने के लिए किया जाता है। इसके मृदु स्वर के स्थान पर उंगली रखी जाती है और इसके सुर बंधे होते हैं। यह यन्त्र घोड़े के बाले से बने छड़ी से बजाया जाता है। यह बंगाल में विख्यात है।

हमें प्राचीन और पुराने साहित्य में एसराज का कोई विवरण नहीं मिलता है। यह सितार के बाद बना था, सारंगी के मेल से। सिर्फ कुछ विख्यात संगीतज्ञ ही सारंगी बजाते थे और चूंकि उस युग के संगीत प्रेमियों के लिए कोई छड़ी वाला यन्त्र नहीं था, तो छड़ी वाले यन्त्र बनने की सम्भावना अधिक थी। यह सब बेला के प्रचलन के पूर्व हुआ। एसराज को देखने के बाद यह प्रतीत होता है कि यह संगीत प्रेमी और शिक्षानवीस के लिए था और इसलिए यह उस्तादों के दिल में जगह नहीं बना पाया जैसे कि सितार, सरोद, सारंगी और अन्य तार वाले यन्त्रों ने किया था।

''गज से बजने वाले वाद्यों में उस समय एसराज प्रमुख था, जिसका वादन पेशेवर संगीतज्ञ ही करते थे। गज के अन्य वाद्य रावणहत्था, सारिन्दा तथा चिकारा आदि लोक वाद्य थे। इसलिए सभ्य समाज को अपने लिए गज का एक नया सुविधाजनक वाद्य निर्माण करना था जिसे उसने इसराज बनाकर दिया। सितार की सरलता की प्रसिद्धि हो चुकी थी इसलिए गज के नये वाद्य का रूप निर्धारण करते समय सारंगी के समान पेट तथा सितार के समान धड़ की बनावट स्वाभाविक रूप से ही सामने आई। यहां यह बात ध्यान देने की है कि इसराज का दण्ड, दण्ड पर परदों की व्यवस्था तथा मुख्य तार की व्यवस्था सितार के समान होती है। केवल सितार की तबली के स्थान पर इसमें खाल चढ़ी होती है तथा चूंकि वादन गज से होता है इसलिए इसके पेट की बनावट तथा घोड़ी रखने की व्यवस्था सारंगी के समान होती है।''

दिलरुबा

यह कहा जा सकता है कि दिलरुबा इसराज का दूसरा संस्करण है। यह दिलरुबा सितार जैसा ही है पर थोड़ा छोटा है और कटोरी के स्थान पर इसका पेट भेड़ के चमड़े से ढका होता है। आकार में कुछ यह सारंगी जैसा है जो घोड़े के बालों की छड़ी से बजता है। इसमें सितार से मिलते–जुलते फ्रेट है, गिनती में 19 जो कि अपनी जगह से हिल सकते हैं। इसमें सिर्फ चार मुख्य तार है। यह एक नियम जैसे बना है जिसमें मुख्य तार के अधीन 22 संवेदनापूर्ण तार है। इसके सुर बांधने की खुंटी सितार की तरह व्यवस्थित है–दो मुंह से लम्बे और दो प्रान्तों से। यह यन्त्र लगभग 3 फुट लम्बा है और इसके पेट की चौड़ाई लगभग 6 इन्च है। इसकी छड़ी लगभग 1.5 फुट लम्बी है।

चार तारों के सुर साधारणतः सा पा सा मा होते हैं और अन्त का सुर इसका मुख्य तार है। पहले दो पीतल के होते है और अन्त के दो स्टील के।

इस यन्त्र में पेट में मोर का आकार भी आता है। यह यन्त्र प्रचलित यन्त्र नहीं है।

दिलरुबा का अंग एसराज से थोड़ा छोटा है। इसके बजाने का तरीका सारंगी जैसा ही है।

बेला

बेला संगीत के वाद्य यन्त्रों में सबसे उन्नत वैज्ञानिक यन्त्र है। यह पश्चिमी देशों में प्रचलित हुआ। आज इसने अतुलनीय ख्याति अर्जित कर ली है। न सिर्फ अंग्रेजी या पश्चिमी संगीत में बल्कि विश्व के हर एक देश के शास्त्रीय, लोकसंगीत और सुगम संगीत में भी। बेला में सारंगी जितने या उससे कुछ ज्यादा गुण हैं। यह मानव के कण्ठ के काफी करीब है। एक वाद्य यन्त्र में जरूरी हर एक गुण इस यन्त्र में है। इसका उद्‌भव भारतीय वाद्य यन्त्रों की नकल से प्रमाणित है।

बेला ने कर्नाटकी संगीत में अपनी एक अलग ही जगह सुरक्षित कर रखी है। हिन्दुस्तानी संगीत की तुलना में बेला को उत्तर में आने में करीबन 1000 वर्ष लगे। बेला का शास्त्रीय संगीत, संगत, एकाकी और समूह संगीतों में योगदान की सराहना के लिए कोई शब्द नहीं बचे हैं। ''बेला बोधक'' की निम्नलिखित पंक्तियाँ खुद ही यह बताती हैं–

''यह एक निर्विवाद–सा तथ्य है कि संगीत के सुयोग्य परिवाहक के रूप में सुमधुर मानव कण्ठ की तुलना और कोई वस्तु नहीं कर सकती। किन्तु सुमधुर कण्ठ एवं अन्य संगीतोपयोगी अपेक्षाओं के

अभाव में यदि किसी वाद्य से उसकी पूर्ति वांछित ही मानव कण्ठ के अधिकतम सन्निकट ध्वनि प्रत्युतपादन करने वाले वाद्यों की श्रेणी में से किसी एक वाद्य को चुना जायेगा। इस दृष्टिकोण से बेला अत्यधिक आकर्षक है, क्योंकि उच्चारण क्षमता को छोड़ कर किसी भी गति या लय में, जो कुछ भी मानव कण्ठ से गाया जा सकता है, उसका समान भाव से प्रत्युत्पादन करने के लिए यह एक अत्यन्त सुन्दर माध्यम है।"

(द्वारा – डॉ. एन. राजम)

चिकारा (राजस्थान)

पेट खाली लकड़ी के टुकड़े या नारायिल के बाहरी हिस्से से बना, बांस का अंग अंगुली फलक का काम करता हुआ। पेट के ऊपर का छावनी खोल से बंधा। तीन मुख्य तार – दो बालों के बने और एक स्टील का बना। अन्दर की तरफ फंसा हुआ और ऊपरी प्रान्त के तीन स्वर बांधने वाले खुंटों से बंधा हुआ। छिद्र युक्त काठ का पुल। तारों को काष्ठफलक पर अंगुलियों से दबाया जाता है।

चिकारा (मध्यप्रदेश)

एक खाली लकड़ी के टुकड़े से बना। छावनी पेट से चिपका या गढ़ा हुआ। छिद्रयुक्त काठ का पुल। तीन मुख्य स्टील के तार अन्दर फंसे हुए और ऊपर सुर बांधने के खुंटे से बंधे हुए। कोई नट नहीं है, अंग के बांये तरफ के खुंटे से तीन संवेदनापूर्ण तार बंधे हुए। पिछले भाग में अंग खाली होता है। तारों को काष्ठफलक पर अंगुलियों से दबाया जाता है। छड़ी बेत और बालों का बना होता है और उसमें घुंघरू बंधे होते हैं।

सारंगा (जम्मू और कश्मीर)

काठ के एक खाली टुकड़े पर छावनी दो विभागों वाले पेट के निचले हिस्से से चिपका हुआ और दूसरा प्रान्त एक खुला गड्डा होता है। अंग की सम्पूर्ण लम्बाई एक सम्पूर्ण एकक की तरह काम करता है। चार तार 2 गांठ वाले और 2 स्टील के – एक डिम्बाकार खुंटा पेटिका से बंधा हुआ। सारे तार अंदर की तरफ तीन अलग लोहे के खिल से पेट पर गढ़ा रहता है। परिवर्तनशील छिद्रयुक्त पुल। कोई नट नहीं होता। छड़ी के लिए खिलान वाला काठ का दण्ड और बाल इस्तेमाल होता है। कण्ठ संगीत में संगत के लिए व्यवहृत होता है।

पेना (मणिपुर)

पेट नारियल के बाहरी हिस्से से बना, लेद् से अंत किया हुआ, मुड़ा हुआ काठ का अंग जो अंगुली फलक का काम करता है। छावनी खोल के ऊपर चिपका हुआ। एक बाल वाला तार, अन्दर के एक छेद से पेट के अन्दर कसा हुआ और अंग के ऊपरी प्रान्त में सीधा बंधा हुआ। खुंटे नहीं होते। अर्धचन्द्र आकारी छिद्रयुक्त लकड़ी का पुल जो वादक के प्रयोजनानुसार हिलाया जा सकता है। मुड़ने वाली लम्बी छड़ी से बजाया जाता है – 76 सेमी. लम्बाई में और तीन भागों में बना – (1) खिलान वाला लोहे का दण्ड (2) बांस का हथैल और (3) दोनों प्रान्तों के कपास के गढ़ी पर सिला हुआ बाल और छड़ी के मुख्य अंग से जुड़ा हुआ। लोह के दण्ड पर छोटे घुंघरू बंधे होते हैं ; बालों को अंगूठे से धकेलकर खिंचाव बनाया जाता है।यह एक प्रचलित तार वाला यन्त्र है जो पूरे मणिपुर में नृत्य और संगीत के संगत के लिए इस्तेमाल होता है। हिमायल के पूर्वी पहाड़ी इलाकों के आस–पास इस यन्त्र के प्रकार पाये जाते हैं। (लम्बाई – 40 सेमी.)

बनाम (बिहार)

बिहार के सन्थल उपजाति द्वारा कण्ठ संगीत में संगत के लिए व्यवहृत एक अमसृन यन्त्र। गले में फिंगा होता है। इस मण्डली के बाकियों की तरह इसकी छाती चपटी होती है, और आयताकार पेट होता है। खुंटा पेटिका से एक गांठ वाला तार बंधा होता है।

सुरिन्दा (राजस्थान)

सुरिन्दा में तीन मुख्य तार होते हैं। 2 स्टील के और एक गांठ वाला तार ऊपरी प्रान्त के डिम्बाकार खुंटा पेटिका के खुंटों से बंधे होते हैं। 6 संवेदनापूर्ण तार जीन और झरा कहलाते हैं। 2 झरा नट से गुजरते हैं और पेटिका के खुंटों से बंधे होते हैं। 4 जील दाहिने प्रान्त में खुंटों से बंधे होते हैं। दोनों नट और पुल चलनशील है। अंगुली फलक के खाली गहवर को ढके रखती है। तारों के निचले हिस्से एक पिन से धरे होते हैं। राजस्थान के पश्चिमी रेगिस्तानी क्षेत्र के लंगा समुदाय द्वारा व्यवहृत। यह वाद्य एकमात्र वायु यन्त्र जैसे मुरला और सतारा के संगत के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

कमाइचा

एकल काठ के खोखले खण्ड से निर्मित संग सम्पूर्ण खुंटा पेटिका, अंगुली फलक और पेट। पेट के लिए इस पर एक बड़ा गोलाकार काठ की गूंज पेटिका होती है। जिस पर छावनी चिपका होता है छिद्रयुक्त पुल। एक नट जो सिर्फ 1 स्टील के तारों के समूह के लिए व्यवहृत होता है। चार मुख्य तार होते हैं – 2 गांठ वाले और 2 स्टील के। चार संवेदनापूर्ण तार अंग के दाहिने तरफ खुंटे पर हुक के नीचे अन्दर मौजूद छड़ी से बंधे होते हैं। ऊपर उल्लेखित 1 स्टील के तारों का समूह भी मुख्य तार की भांति छड़ी वाले होते हैं। यह काठ और बालों की लम्बी और मुड़ी हुई छड़ी से बजता है।

यह राजस्थान के पश्चिमी सीमा के जिलों में रहने वाले पेशेवर गायकों की एक श्रेणी द्वारा जिन्हें मांगणियार कहा जाता है, व्यवहृत होता है।

धानि सारंगी

इस यन्त्र के आकार के कारण इसे डेढ़ पसली सारंगी भी कहा जाता है। चार तारों में 2 स्टील के बने होते हैं और 2 गांठ के। मुख्य तार स्टील का होता है। 14 संवेदनापूर्ण तार – 9 दाहिने तरफ और 5 यन्त्र के सामने की तरफ। इसकी तबली का एक भाग अर्द्ध गोलाकार वक्री होता है तथा दूसरा/अन्य भाग सपाट फिंगर बोर्ड से लगा होता है। उपकरण का पेट (उदर) केवल एक तरफ मेहराबित रहता है और दूसरी तरफ से फिंगर बोर्ड से लगा होता है। यह जोगी समुदाय द्वारा गायन के साथ उपयोग किया जाता है।

गुजरातन सारंगी

चार तारों में से दो स्टील तथा 2 तांत गट की बनी होती है। मुख्य तार स्टील की होती है। 9 नाजुक तार, सभी राग खूंटी पर दाहिने तरफ। लंगा समुदाय द्वारा गायन के साथ प्रयोग किया जाता है।

जोगीया सारंगी

मुख्य तार तांत (गट) का बना होता है। 4 तारों में से दो स्टील तथा दो गटी के बने होते हैं। 11 झील की तारें, सभी राग खूंटी पर दाहिने तरफ। यह जोगी समुदाय द्वारा गायन तथा स्थानीय धार्मिक योद्धाओं के गाथा–गीत (आल्हा) के साथ किया जाता है। निहालदे सुल्तान का मशहूर गाथा–गीत इसी उपकरण के साथ गाया गया है।

सिंधी सारंगी

मुख्य तार स्टील का होता है। 4 तारों में से 2 गट तथा 2 स्टील के बने होते हैं। 25 झील के तार जो 16 खूंटियों से दाहिने तरफ और 1 बांई तरफ तथा 8 खूंटी बॉक्स पर, एक साउण्ड होल ढांचे के पास। लंगा समुदाय द्वारा गायक के लिए प्रयोग किया जाता था।

i. मिश्रा लालमणि (2011) भारतीय संगीत वाद्य, भारतीय ज्ञानपीठ, पृ. 116
ii Wikipedin
iii http://www.omenad.net/page.php?goPage=%2Farticles%2Fomeswarlipi.htm
iv https://en.wikipedia.org/wiki/Madhukali
v http://www.madhukali.org/
vi http://www.omenad.net/page.php?goPage=%2Farticles%2Fomeswarlipi.htm

कुमार नवजीत नारायण देव
(शोधार्थी संगीत)
वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली राज.

प्रो. ईना शास्त्री
(विभागाध्यक्ष संगीत)
वनस्थली विद्यापीठ